सुपर पावर नहीं भारत को हम बनाएंगे 'विश्व गुरु'

एकेटीयू का दीक्षांत समारोह

- **केंद्रीय गृहमंत्री ने कहा, युवा तकनीकी का सकारात्मक इस्तेमाल करें, अलकायदा गलत उपयोग कर फैला रहा विध्वंस**
- **समारोह में इसरो के अध्यक्ष एएस किरण कुमार को दी गई डीएससी की मानद उपाधि, 62 मेडल व 64083 डिग्रियां दी गईं**

इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम प्राविधिक विवि के दीक्षांत समारोह में राज्यपाल राम नाईक, गृहमंत्री राजनाथ सिंह, एकेटीयू के कुलपति प्रो. विनय कुमार पाठक, प्राविधिक शिक्षा राज्यमंत्री फरीद महफूज किदवई व इसरो के अध्यक्ष एएस किरणकुमार

जागरण संवाददाता, लखनऊ : भारत को हम सुपर पावर नहीं बल्कि विश्व गुरु बनाएंगे। हम यह नहीं चाहते कि सिर्फ इसलिए शक्तिशाली हो जाएं कि दुनिया के दूसरे देश हमसे डरें। यह विचार केंद्रीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने व्यक्त किए। वह शनिवार को गोमतीनगर में स्थित इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय (एकेटीयू) के 13 वें दीक्षांत समारोह में उपस्थित विद्यार्थियों व शिक्षकों को संबोधित कर रहे थे। दीक्षांत समारोह में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के अध्यक्ष अलूर सीलिन (एएस)किरण कुमार को डीएससी की मानद उपाधि दी गई। 62 मेधावियों को मेडल व 64083 विद्यार्थियों को डिग्रियां दी गईं।

केंद्रीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि हम अपने आपको आर्थिक व सैन्य शक्ति में मजबूत तो बनाएंगे, लेकिन हमारी प्राथमिकता भारत को विश्व गुरु बनाने की ही है। ताकि दुनिया का कोई भी देश हमारे करीब हो तो वह सुकून का एहसास करे न कि हमसे डरे। उन्होंने मेडल पाने वाले मेधावियों व डिग्री पाने वाले विद्यार्थियों से कहा कि विज्ञान एवं तकनीकी का तेजी से विकास हो रहा है। ऐसे में वह तकनीकी का सही इस्तेमाल कर देश को मजबूत बनाएं। उन्होंने विद्यार्थियों को उदाहरण दिया कि एक तरफ इनफोसिस जैसी आइटी कंपनी है जिसका पूरी दुनिया में नाम है और दूसरी ओर आतंकी संगठन अलकायदा है। दोनों के पास दक्ष वैज्ञानिक हैं और अच्छा नेटवर्क है। मगर इनफोसिस सकारात्मक कार्य में तकनीकी का उपयोग कर मानव कल्याण का काम कर रही है और अलकायदा की विनाशकारी सोच गलत इस्तेमाल कर आतंक व विध्वंस फैला रही है। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा वह अच्छी सोच व विचार रखें और जीवन मूल्यों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता रखें। चरित्रवान बनें और अपने व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास पर जोर दें।

कार्यक्रम में इसरो के अध्यक्ष एएस किरण कुमार, कुलाधिपति व राज्यपाल राम नाईक, प्राविधिक शिक्षा राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) फरीद महफूज किदवई व कुलपति प्रो. विनय कुमार पाठक ने मेधावियों को पदक दिए। कार्यक्रम में पहली बार पांच स्वायत्तशासी सरकारी इंजीनियरिंग कॉलेजों के विद्यार्थियों सहित कुल 62 मेडल और बीटेक, बीफार्मा, बीआर्क, एमबीए व एमसीए सहित विभिन्न कोर्सेज के कुल 64083 विद्यार्थियों को डिग्रियां दी गईं।

अबकी बढ़ गए पीजी व पीएचडी के विद्यार्थी

एकेटीयू के दीक्षांत समारोह में 64083 विद्यार्थियों को डिग्री दी गई। एकेटीयू कुलपति प्रो. विनय कुमार पाठक ने बताया कि पिछले सालों की तुलना में इस बार परास्नातक (पीजी) कोर्सेज के विद्यार्थी बढ़े हैं। एमटेक, एमफार्मा व पीएचडी में विद्यार्थी बढ़े हैं। इसमें बीटेक कोर्स के 48365, बीफार्मा के 2152, बीएचएमसीटी के 129, बीआर्क के 361, बीएफएडी के 24, एमबीए के 8788, एमसीए के 3621, एमफार्मा के 154, एमटेक के 450, एमआर्क के पांच व पीएचडी के 34 विद्यार्थी शामिल हैं।

छह मेडल पाकर मेधावियों ने दिखाया दम

- **रामस्वरूप मेमोरियल कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड मैनेजमेंट के मेधावियों ने दिखाया जलवा**

जागरण संवाददाता, लखनऊ : डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय (एकेटीयू) के 13 वें दीक्षांत समारोह में श्री रामस्वरूप मेमोरियल कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड मैनेजमेंट के छह मेधावियों ने पदक पाकर कॉलेज का गौरव बढ़ाया है। दीक्षांत समारोह में पदक पाने वाले मेधावियों व उनके अभिभावकों को कॉलेज में शनिवार को सम्मानित किया गया और संफलता का जश्न मनाया गया।

कॉलेज की बीटेक सिविल इंजीनियरिंग की छात्रा तहजीब जहरा ने 86.7 प्रतिशत अंक पाकर गोल्ड मेडल, एमबीए की प्रियंका अवस्थी ने 82.04 प्रतिशत अंक पाकर गोल्ड मेडल, बीटेक आइटी की छात्रा प्रियांशा तिवारी ने 84.78 प्रतिशत अंक पाकर गोल्ड मेडल, बीटेक इलेक्ट्रिकल एंड इलेक्ट्रानिक्स इंजीनियरिंग की छात्रा समा परवीन ने 85.07 प्रतिशत अंक पाकर सिल्वर मेडल, एमबीए में 80.56 प्रतिशत अंक पाकर नमिता ने ब्रांज मेडल और बीटेक इलेक्ट्रानिक्स एंड कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग की छात्रा रूपाली तिवारी को भी ब्रांज मेडल मिला है। संस्थान के अधिशाषी निदेशक पंकज अग्रवाल ने कहा कि वह सिर्फ अच्छी नौकरी पाकर मात्र धन ही न कमाएं बल्कि बेहतर जीवन जीने की कला सीखें।

रामस्वरूप मेमोरियल ऑफ कालेज में सम्मानित हुए मेधावी

इन्हें मिले मेडल

गोल्ड मेडल : यतेन्द्र कुमार शर्मा (बीटेक मैकेनिकल इंजीनियरिंग) आइईटी लखनऊ, तहजीब फातिमा (बीटेक सिविल इंजीनियरिंग) श्री राम स्वरूप मेमोरियल कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, प्रियंका अवस्थी (एमबीए) श्री रामस्वरूप मेमोरियल कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, प्रियांशा तिवारी (बीटेक आइटी) श्रीराम स्वरूप मेमोरियल कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड मैनेजमेंट।

इन्हें मिला सिल्वर मेडल : शुभी श्रीवास्तव (बीटेक सिविल इंजीनियरिंग) बीबीडीएनआइटीएम लखनऊ, समा परवीन (बीटेक इलेक्ट्रिकल एंड इलेक्ट्रानिक्स इंजीनियरिंग) श्रीराम स्वरूप मेमोरियल कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड मैनेजमेंट लखनऊ, आकांक्षा पांडेय (बीटेक इलेक्ट्रानिक्स एंड कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग) आइईटी लखनऊ।

इन्हें मिला ब्रांज मेडल : रूपाली तिवारी (बीटेक इलेक्ट्रानिक्स एंड इंस्ट्रूमेंटेशन इंजीनियरिंग), श्री रामस्वरूप मेमोरियल कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड मैनेजमेंट लखनऊ, नमिता (एमबीए) श्री रामस्वरूप मेमोरियल कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड मैनेजमेंट लखनऊ, सिद्धार्थ पांडेय (बीटेक मैकेनिकल इंजीनियरिंग) आइईटी लखनऊ।

इंजन के पार्ट्स बनाने में एनर्जी की बर्बादी होगी कम

- **आइआइटी कानपुर में एनपीटीईएल के सह समन्वयक व एकेटीयू के रिसर्च स्कॉलर मोहन कृष्ण मिश्रा ने खोजा नया नुस्खा**

जागरण संवाददाता, लखनऊ : इंजन के पार्ट बनाने में हीट ट्रीटमेंट में अब स्टील व एनर्जी की बर्बादी कम होगी। इंडक्शन हार्डेनिंग प्रॉसेस को और बेहतर कर इसे रोका जा सकेगा। इसका फायदा ऑटोमोबाइल इंडस्ट्री को होगा।

यही नहीं इस शोध के बाद छोटे उद्यमी भी इस ओर कदम बढ़ा सकेंगे। एकेटीयू के 13 वें दीक्षांत समारोह में मैकेनिकल इंजीनियरिंग के रिसर्च स्कॉलर व इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (आइआइटी) कानपुर में एनपीटीईएल प्रोग्राम के सह समन्वयक (उत्तरी भारत) मोहन कृष्ण मिश्रा ने अपने रिसर्च से इस काम को और आसान कर दिया है। मोहन कृष्ण मिश्रा ने बताया कि उन्होंने जो प्रॉसेस का प्रयोग किया वह नॉन डिस्ट्रिक्टिव प्रॉसेस है और इसमें हीट ट्रीटमेंट में स्टील व एनर्जी की जो बर्बादी अभी होती है वह बहुत कम हो जाएगी। उन्होंने बताया कि इंजन के पार्ट्स बनाने में हीट ट्रीटमेंट में इस बर्बादी को रोकने का फायदा ऑटोमोबाइल इंडस्ट्री को होगा। क्योंकि इंडक्शन हार्डेनिंग प्रॉसेस को पहेबहतर बनाया गया है और इसमें सेंसर की मदद से ऐसा कंट्रोल किया जाता है जिसके कारण अगर प्रॉसेस में कोई नुकसान होने वाला होता है तो खुद सेंसर इसकी जानकारी देकर उसके कंपोनेंट को जरूरत के अनुसार घटा-बढ़ा देते हैं। अभी बड़े उद्यमियों ने वर्चस्व बना रखा है मगर जब कम लागत में मशीन और पांच किलोवाट पॉवर कंट्रोल पर उसे चलाया जा सकेगा तो दूसरे छोटे उद्यमी भी इधर कदम बढ़ाएंगे।

दीक्षांत समारोह में मोहन कृष्ण मिश्रा